7-12-67 ओम शान्ति रात्री कलास

पढ़ाई बच्चों के लिये बहुत सहज है। कोई साधु सन्त भी नही है। बड़ी बाप है मां है। यह जैसे परिवार है। ऐसा परिवार कोई होता नही है। ईश्वरीय परिवार है यह तो विश व के मालिक हो गये। ईश्वर कोईविश्व का मालिक है नही। परन्तु कहा जाता है मालिक है। तो तुम बच्चें भी विश्व के मालिक हो मालिको को खुशी होनी चाहिये खुशी क्यों नही रहती क्योंकि याद की यात्रा मे नही रहते। समझते भी है कि हम उंच ते उंच इमति हान पढ़ते है। अल्फ बे पढ़ते है तो पटी पार स्लेट पर लिखते है। तुमको तो स्लेट पर लिखने का है नही परन्तु औराके को पढ़ाना होता है इसलिये नो टकेरती हो दूसरा स्कूल और कोई नही है ज ा पढ़ कर फिर दूसरो को पढ़ाये। तुम सब को पढ़ाते हो। सबका हक है यह नालेज बहुत सहज है। कलियुगी मनुष्य बुलाते रहते है। यहा तुम बाप से पढ़ रहे हो। तुम अच्छी रीत समझते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार बप से पढ़ना है। बाप से प्यार से मिलना है। टीचार से पढ़ना है। गुरु से याद भी सीखना है। बहुत सहज है। बच्चो को खुशी बहुत होनी चाहिये। खुशी है भविष्य खजाने की। बहुत खुशी हसेनी चाहिये। टीचर तो सबको एक जैसा ही पढ़ाते है। पढ़ाई की बहुत 2खुशी होनी चाहिये2तुम जानते होकि यह क ई ऐसी है हम सच्च सच पदम पति बन रहे है तुम सबको सच बताते हो यह गीता का भगवान वाला चित्र बहुत अच्छा है। कई बच्चे डरते हैसमझते है कि यह तो पत्थर मारना है गेता को भी खण्डन किया हुआ है उंच ते उंच शास्त्र है गीता2को खण्डन की हुई है। तो उनको सिध करना चाहिये परन्तु अच्छे 2महा रथी डरते है। विनाश काले विपरीत बुधि वाला चित्र भी बनवाया था। तो बाबा ने लिखा था कि कांग्रेस कुरु कौरव सब अक्षर लिख डालो तो कोई इनमे भी डरते थे। तुम बच्चे जानते हो तुम्हारे लिये कोई उल्टा सुल्टा बोलेगे तो बहुत पछताना पड़ेगा देखेगे यह तो भारत को स्वर्ग बना रही है तुमको हमने कम जास्ती बोला किन्तु आवेगे जरु। यह मा ताये भारत की बहुत उंच सेवा कर रही है। तुम कोई मनुष्य के मत पर नही हो यह अपने को भगवान नही कहते है। भगवान तो उंच ते उंच निराकारहै। वो ही पतित पावन है। कहते है कि देह के सब धर्म को छोड़ माम् एक याद करो इसमेडरने की ी बात नही है। नही गीा सप्ताह चलाये कैसे सकेबेा बा ाबा लिखते है नही तो तुम ब ाओ कैसे लिखे डरने की तो बात ही नही है। कराची में वजीरो आद के आग्रे बुलाते थी कोई से डरती ना थी बहुत नशा था येह कौन है जो हमको बाप से छुड़ाते है। बाप ऐसा नही करावेगे जिसमें डरने की बात है। एक2 चि त्र बड़ा कलिख के और भी चित्र निकाले तो हो सकता है कहा जाता है कि सच त त बीथो नच नाच तो तुम बच्चो को करना है। समझते भी है कि हम बेहद बाप कें सन्मुख बैठे है हम नई दुनिया के मालिक बनते है कितनी खुशी होनी चाहिये भूलने कर तो दरकार ही नही। भूलेगे वो इस ज्ञान को ना समझते है और ना समझा सकते है? तुम देख रहे हो कोई समझ सकते है। परन्तु फिर क्रेक्टर नही है। जिस कारण सेन्टर पर कोई भी पसंद नहीर करते है बाबा नाम भी बताते कि इन इन को फ्लानी जगह पर भेजा स्टूडेन्ट पसंद नही करते है तो बाप को चेंज करना पड़ता है क्योंकि रिपोटस आती है। कोई समय नाम भी देना पड़ता कोई पसंद ना करते तो फिर है मधुबन। बाप सहन कर सकते है बच्चे सहन नही कर सकते। तो उच्छल पड़ते है लिखते है कि हमको फ्लाना टीचा ना चाहिये यह टीचर तो मेजोरिटी जब खिती है तो तब बबा चेंज करते है विवेक कहते है कि बच्चो को तो खुशी का पारावास ना होना चाहिये सदैव हर्षित और आपस में भी बहुत मीठे तुम बादशाहो से भी बड़े बादशाह हो। इन ल० ना० से भी बड़े हो बाप बचो की महमा करते है तुम देवताओ से भी इस समय उंच हो। चोटी उपर है या सिर उपर है?तुम बहुत बडे हो बाप ही तुमको पढ़ाते है तुम बेहद बाप के बच्चे बहुत उंच ते उंच है। अन्दर में ऐसा नशा होना चाहिये कि हम ब्राहमण सबसे उंच है। तो हमारी चलन भी ऐसी होनी चाहिये यह समझते भी है कि भगवान पढ़ाते है। हम पढ़ते नही है। हमारा कर्म ऐसा खोटा जो बाप पढ़ाते है तो हम धारण नही कर सकते है। फिर भविष्य में हमारा

क्या होगा परन्तु पत्थर बुधि होने कारण समझते नहीं है। दिल खाती भी होगी शिव बाबा कहते है कि सर्विस करो ।हम सीखे ही नही है। तो हमको क्या मिलेगा। कुछ भी विचार नही चलता है। ऐसे के ऐसे ही रह जावेगे। स्कूल में टीचर को ख्याल रहेगा ना। पुरुषार्थ करने वाले करते है। कोई नही करते है। खुद भी समझते है कि हमारी जो इस समय की चलन है इनसे ऊंच नही बन सकेगे। एक कान से सुना फिर दूसरे से खलास हो जाता है। बाप समझते है कि नम्बरवार पतित है जितना देरी से आते है उतना कम नम्बर। हिसाब किया जाता है। अजामिल भी है। साधु सन्त महात्मा जो ठिक्कर भित्तर में कह देते हैं वो भी अजामिल मिसल है। यह तो दुनिया ही अ ामिलो की है। तमो प्रधान हो गई है। सन्यासी तो सन्यास कर पवित्र बनते है। विचार करना चाहिये कि हम अपना कल्याण तो करें। यह इतना ऊंच बनते है और हम ऐसे है? सो भी कल्प कल्पान्तर। रात को नींद भी फिट जानी चाहिये बाप को याद करे और फिर माला के नजदीक पिरोये जावे। स्कालरशिप ले लेवे। इसको कहा जाता है कि अपने ऊपर रहम करना। रहम दिल का बुलाया वो तो समझाते है। परन्तु समझते नही है। तो रहम पड़ता है। ।कल्प कल्पान्तर इनकी यही हालत होगी। अच्छा मीठे मीठे सिकि लधे बच्चो को रूहानी बाप वा दादा का याद प्यार और गुड नाईट।

पत्र की कापी 30-11-67

************* ****** मुजंफरपुर निवासी सभी रूहानी नूरे रत्नो सभी महा वीरनी शक्तियों को बहुत याद प्यार? बहुत हुलास से सर्विस की है। कुछ हंगामा भी हुआ है। एक दिन सभी आये कर पूछ लटकायेंगे। मुजफ्फरपुर निवासी अच्छा शो कर रहे है। भल नेपाल में भी जा सकते है। चित्रो सहित चित्र जरूरी ले जा सकते है। शायद ठंडी में मेला भी लगता है वहा क्षीर सागर और विश्व सागर का अर्थ समझाना और सिर्फ निराकार शिव बाबा को याद करने सेक पतित से पावन हो कर क्षीर सागर विष्णु पुरी में जा सकते है। अब तो पुरूषोतम संगम युग है। कायदे अनुसार समझाना है पुरूषोतम संगम युग पर। कल्प के रात दिन का पुरूषोतम संगम युग है। बेहद के बाप से वर्षा पाना है। बेहद स्वर्ग के सुख का तो पा लो और पूरा समझाना है कि यह हठ योगी सन्यासी वा मनुष्य मात्र ये रूहानी शिक्षा विश्व के आद मध्य और अन्त डियूरेशन की कोई और जान ना सके। तो यह नालेज और कोई दे ना सकता है। चित्र मुख्य विनाश काले विपरीत बुधि, सीड़ी तो जरूरी समझानी के चित्र है सो ले जाना है। जो जिस समय स्थापन करते है सो फिर उसी समय स्थापना करने आते है। परम पिता तो आते ही है पुरूषोतम संगम ये युग पर है। पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना करने आते है। सभी को पुरूषोतम संगम युग पर खड़ा कर खूब अच्छी रीत से समझाना है। और बाप कहते है कि भगवानो वाचय देह सहित देह के सभी सम्बन्धो को छोड़ एक की याद में रहो। देह धारियो को छोड़ विदेह शिव बाबा को याद करो। स्वयं शिव बाबा कह रहें है कि जिस शरीर का आधार लेता है वो अपने जन्मो को नही जानते है। इसने ही पूरे 84 जन्म लिये है। 84 जन्मो के अन्त के भी अन्त वाण प्रस्त अवस्था में इनका आधार लिया है। प्रजा पिता नाम से क्योकि यज्ञ के लिये ब्रहमण चाहिये। प्रजा पिता ब्रहमा भी चाहिये जिनकी मुख वंशावली को प्रजा पिता ब्रहमा कुमार कुमारीयां कहा जाता है। और इस सम्बन्ध से क्रिमनल आखें धोखा ना देगी आपस में प्रजा पिता ब्रहमा कुमार कुमारीया समझने से। पुरूषोतम संगम युग पर। प्रजापिता ब्रहमा कुमार मुख वंशावली ही सर्वोतम कुल गाया गया है। बाद में देवी देवता क्षत्री वैश्य शूद्र। ब्रहमण ही स्वदर्शन चक्र-धारी अर्थात सारी सृष्टि चक्रके आद मध्य और अन्त को परम पिता द्वारा जान मनुष्य से देवता फिर क्षत्री वैश्य शूद्र हम सो ब्राहमण हम सो देवता हम सो क्षत्री ;हम सो वैश्य हम सो शूद्र ऐसे सीढ़ी उतरते है। और एक ही पुरूषोतम संगम युग पर। शिव बाबा की याद में रहने से विकर्म सभी विनाश हो जाते है। और विश्व का मालिक बन जाते है। यू भी भारत में देवी देवता राज्य होता है। ऐसे पहले ज्ञान आधा कल्प फिर आधा कल्प भक्ति। फिर संगम युग पर ज्ञान से पवित्र बन विश्व का मालिक बनते है। इनको हार जीत को ड्रामा वा साल्वेन्ट इनसाल्वेन्ट वा नई दुनिया पुरानी दुनिया का चक्र चलता है। ओम शान्ति।